

न होता प्रदूषण और रोंगों का वार। करते यदि यज्ञ, पैड़-पौधों का विस्तार ॥



# जीवन व जगत की यात्रा अनादि व अनंत है।

इस यात्रा का संचालक व संवाहक  
तत्व पुण्य है व पुण्य का आधारभूत  
तत्व यज्ञ है, इसलिए वेदों में कहा :-  
अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः  
यज्ञ चराचर जड़ एवं चेतन जगत  
की नाभि है, केन्द्र है।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । -गीता -3.13  
यज्ञ शेष अन्न को खाने वाले यजमान पापों से मुक्त हो जाते हैं।